K Nand M.A II Sem 5 (1)

संस्कृति अछूता नहीं समझा जाता है प्रायः देखा जाता है भिन्न-भिन्न संस्कृतियों में विभिन्न सामाजिक अवसरों पर जैसे - शादी-विवाह, मृत्यु आदि पर व्यवहारों में भिन्नता पाई जाती है ऐसी समस्याओं पर प्रकाश डालना अन्य दूसर तरह के शोध के द्वारा संभव नहीं है।

(6) अन्तर सांस्कृतिक शोध प्रविधि द्वारा प्रयोगकर्ता कई प्रकार के चरों का साथ-साथ अध्ययन बड़ी आसानी से कर लेते हैं जो कि शोध के अन्य विधियों में संभव नहीं है। इस विधि में लचीलापन का गुण होने के परिणाम स्वरूप आवश्यकतानुसार उचित परिवर्तन करने की पूरी सुविधा होती है क्योंकि यह शोध एक प्रकार का सर्वे शोध है।

दोष:—

ऊपर वर्णित गुणों के बावजूद अन्य शोध प्राविधियों की भाँति यह शोध प्राविधि भी सर्वथा दोषमुक्त प्राविधि नहीं है। मनोवैज्ञानिक आलोचकों द्वारा इस प्रविधि का निम्नांकित दोषों का उल्लेख किया गया है—

[1] जॉण्डन (Zanden, 1978) महोदय के अनुसार इस प्रविधि में जो आँकड़े संग्रहित किए जाते हैं, उनमें कई कारणों से काफी भिन्नता पाई जाती है। इस भिन्नता का प्रमुख वजह शोधकर्ता की अपनी क्षमता होती है। इस प्रविधि के माध्यम से शोध कार्य करने के लिए पूर्ण प्रशिक्षित एवं कुशल शोधार्थी की आवश्यकता होती है। जब प्रशिक्षण एवं अनुभव की कमी वाले शोधार्थी द्वारा अध्ययन किया जाता है तो मानक व्यवहारों के बारे में विभिन्न सांस्कृतिक समूहों से आँकड़े संग्रहित करते हैं तो उनमें अधिक भिन्नता

देखने को मिलती है। फलतः सही-सही निष्कर्ष पर पहुँचना कठिन हो जाता है।

(2) क्रास सांस्कृतिक शोध विधि का दूसरा महत्वपूर्ण दोष बतलाते हुए मुनरो एवं मुनरो (Munroe and Munroe, 1975) में कहा गया है कि इस प्रविधि में प्रायः ऐसा होता है कि कुछ शोध समस्याएँ ऐसी होती हैं जिनके बारे में आँकड़ा कुछ संस्कृति में तो मिल जाते हैं परन्तु कुछ संस्कृति में नहीं मिल पाते हैं। उदाहरण स्वरूप मान लिया जाय कि एक शोधार्थी इस समस्या पर अध्ययन करना चाहता है कि सहोदर भाई-बहन की शादी से उत्पन्न बच्चों का शील-गुण अलग-अलग माता-पिता से उत्पन्न लड़के-लड़कियों की शादी से उत्पन्न बच्चों से कितना भिन्न या समान है तो इस प्रकार के आँकड़े उपलब्ध होना मुश्किल ही है क्योंकि एकाध जन जाति समूहों को छोड़कर सगे भाई-बहन में शादी का प्रचलन नहीं मिलता है। फलतः इस प्रकार के शोध समस्या का अध्ययन इस शोध प्रविधि में संभव नहीं हो पाता है।

(3) मार्श (Marsh, 1967) और कोहन (Cohan, 1968) का मत है कि अन्तर सांस्कृतिक शोध में व्यक्तियों के खास-खास व्यवहारों एवं प्रेरकों के अध्ययन पर अधिक बल डाला जाता है। इस शोध विधि के द्वारा वैयक्तिक भिन्नताओं के संबंध में अध्ययन में शोधार्थी को अभिरुचि नहीं होती है। फलतः विभिन्न संस्कृतियों में व्याप्त भिन्नताओं का अध्ययन इस प्रविधि द्वारा संभव नहीं हो पाता है।

(4) क्रास संस्कृति शोध में एक प्रमुख समस्या प्रतिदर्शन (Sampling) से संबंधित होती है। इस प्रविधि में इकाई निर्धारण एक बड़ी समस्या होती है। फलतः प्रतिदर्शन एक बड़ी समस्या हो जाती है।

अन्त सांस्कृतिक शोध प्रविधि में चरों को वैज्ञानिक ढंग से परिभाषित करना कठिन होता है। इस प्रविधि में जन-सांख्यिकीय प्रकृति के चरों को तो आसानी परिभाषित कर लिया जाता है। परन्तु मनोवैज्ञानिक प्रकृति के चरों यथा - प्रेरणा, विकास, भाव, संवेग आदि प्रकार के चरों को परिभाषित करना अत्यन्त कठिन कार्य हो जाता है। अतः मनोविज्ञानियों का मत है कि इस शोध प्रविधि द्वारा जन सांख्यिकीय चरों की तुलना का मनोवैज्ञानिक चरों का अध्ययन इस प्रविधि द्वारा सम्भव नहीं है।

उपरोक्त वर्णित दोषों के बावजूद आधुनिक समय में शोधरत मनोविज्ञानियों में यह शोध प्रविधि मानवशास्त्रियों एवं समाजशास्त्रियों की भाँति अत्यन्त लोकप्रिय प्रविधि है।

The End